❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
- अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 41, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 नवम्बर, 2017 से रविवार 19 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शोक! शोक!! महाशोक!!!

आर्यजगत् के लब्धप्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, वैदिक विद्वान, औजस्वी वक्ता

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी का दुखद निधन : आर्यजगत में शोक की लहर

देश-विदेश में किए गए वैदिक धर्म के प्रचार कार्यों को हमेशा याद रखेगा आर्यजगत् - धर्मपाल आर्य

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात के अधिष्ठाता, ओजस्वी एवं कान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता, आचार्य ज्ञानेश्वर जी का 14 नवम्बर रात्रि करीब 1 बजे हृदयाघात से देहावसान हो गया है! उनके पार्थिव शरीर को आश्रम के विशाल भवन में दर्शनार्थ रखा गया व दिनांक 15 नवम्बर 2017 को प्रात: 10 बजे अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न कराया गया, जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान सहित देश-विदेश से सैंकड़ों आर्य जनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा दिनांक 16 नवम्बर को सम्पन्न हुई।

बीकानेर के एक प्रतिष्ठित स्वर्णकार परिवार में जन्में आचार्य जी एम. ए. प्रथम वर्ष का अध्ययन करते हुए युवा अवस्था में ही आर्य समाज के संपर्क में आये। लगभग २५ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग के कुछ दिनों बाद ही आर्य जगत की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी से संपर्क हुआ। उनके निर्देश अनुसार आर्ष गुरुकुल कालवा में आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक के पास लगभग साढ़े छः वर्ष व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। तत्पश्चात गुरुकुल काँगड़ी के उपकुलपति प्रो. रामप्रसाद जी वेदालंकार से निरुक्त अध्ययन तथा स्वामी दिव्यानन्द जी से काव्यालंकार व छंदशास्त्र का भी अध्ययन किया। उच्च स्तर के योगाभ्यास व दर्शनों के अध्ययन हेतु 1986 में आर्यवन, रोजड, गुजरात में आयोजित दर्शन योग प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित हुए।

आर्यसन्देश के गत अंक में ही प्रकाशित हुआ था आचार्य जी द्वारा प्रेषित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा (बर्मा) सम्बन्धी संस्मरण

आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने देश-विदेश में सैकडों क्रियात्मक ध्यान योग प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से हजारों साधकों का अध्यात्म मार्ग प्रशस्त किया। योग एवं अध्यात्म संबंधित साहित्य, ग्रंथ, पुस्तक-पुस्तिकाएँ, चार्ट, कैलेंडर, फोल्डर, पत्रक आदि स्वरूप में लाखों की संख्या में प्रकाशित कराके देश-विदेश के हजारों घरों मे नि:शुल्क वितरण कराया।

एक विशेष योजना अग्निहोत्र प्रशिक्षण केंद्र जिसमें यज्ञ में प्रयुक्त जड़ी-बूटियों एवं पात्रों आदि की प्रदर्शनी, विडियो थिएटर तथा यज्ञ शाला आदि का निर्माण कराया जिसमें प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखण्ड अग्निहोत्र विगत 2 वर्षों से चल रहा है। आचार्य जी ने भारत के अनेक प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने के साथ- साथ २८ बार विदेश यात्राएं भी की। आपने दर्शन योग महाविद्यालय तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम जैसी परियोजनाओं के साथ विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास, वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विचार टी.वी. आदि संस्थाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया। कच्छ के भूकंप, सूरत की बाढ़ का प्रकोप आदि प्राकृतिक आपदाओं में पीड़ितों की सहायता का कार्य भी विशाल स्तर पर किया।

आज आचार्य जी हमारे मध्य में नहीं रहे, परन्तु आप उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध प्रेरणा पुंज बनकर हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं पाठकों की ओर से हार्दिक शोक व्यक्त करती है।** - ***सम्पादक***

सत्यासारणी : संस्था या दानव.....?

.....देखा जाए तो आदि शंकराचार्य की देव भूमि केरल में धर्मांतरण के दानवों की सत्यासारिणी एक अकेली संस्था नहीं है। ऐसी ही एक और दूसरी संस्था पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया के बारे में भी अब केरल पुलिस का दावा है कि इसके 6 कार्यकर्ता आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट में भर्ती हो चुके हैं। इनमें एक महिला भी है। एक न्यूज चैनल के स्टिंग के बाद केरल की स्वयंसेवी संस्था पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया भी जांच के घेरे में है। ....

केरल के मलप्पुरम जिले में "मरकजुल हिदया सत्या सारणी" संस्था को भले ही बहुत कम लोग जानते हों पर यह संस्था इस समय केरल के हिन्दू समुदाय के लिए एक दानव का रूप धारण कर चुकी है। वह दानव जिसकी गुफा में जो जाता है वह वापस ऐसा नहीं आता। वैसे दिखावे को तो यह संस्था कहती है कि केरल का धार्मिक क्षेत्र मनुष्य देवताओं की पकड़ में है, हम आध्यात्मिक सुधार और ईश्वर के डर की खोज के बजाय अर्थहीन संस्कार करते हैं। मानसिक अराजकता और उथलपुथल से हताश लोगों के लिए सत्यासारिणी एक सच्चाई की यात्रा है। असल में इस संस्था की सच्चाई का रास्ता धर्मांतरण पर आकर खत्म हो जाता है। हाल ही में एक टीवी चैनल के "ऑपरेशन कन्वर्जन फैक्ट्री" से यह खुलासा हुआ है कि इस संगठन के शीर्ष पदाधिकारियों ने साफतौर से यह स्वीकार किया था कि वे बड़े पैमाने पर धर्मांतरण, अवैध फाइनेंसिंग करते हैं और उनका अंतिम लक्ष्य भारत को एक इस्लामी देश बनाना है।

आज से करीब पांच साल पहले अस्तित्व में आई सत्यासारणी संस्था का उद्घाटन 7 जनवरी 2012 को हुआ था, संस्था एक मुस्लिम बहुल इलाके से अपना कार्य करती है दिखने में यह पूरी तरह शैक्षिक परिसर जैसा है जो एक बार में 200 व्यक्तियों का आयोजन करता है। पुरुषों और महिलाओं, कक्षा के कमरे, मस्जिद, पुस्तकालय, दवाखाने, कार्यालय, बैठक हॉल, डाइनिंग हॉल आदि छात्रावासों के साथ बनाये गये है। संस्था के अधिकारी स्वीकार करते हुए बताते हैं कि सत्यासारिणी में हिन्दू और ईसाई दोनों धर्म के लोग आते हैं जिनका ब्रेनवाश कर इस्लाम में आने की दावत दी जाती है।

हालाँकि धर्म परिवर्तन वही लोग करते जो वैचारिक रूप से कमजोर होते हैं किन्तु कई बार इन्सान को वैचारिक रूप से कमजोर भी कर दिया जाता है जिसका ताजा उदाहरण है केरल है पिछले दिनों जहां एक महिला ने अपनी बेटी को जबरन मुस्लिम बनाने की शिकायत जिले के पनगोड़ थाने में दर्ज की थी महिला का आरोप है कि उसकी बेटी अपर्णा को कुछ लोगों ने गुमराह करके इस्लाम अपनाने का दबाव डाला था, जिसके बाद उसने अपना नाम अपर्णा से शबाना कर लिया है। पढाई के लिए साल 2013 में एर्नाकुलम गयी थी। लेकिन आज गैर मुस्लिमों के बीच इस्लाम का प्रचार करने वाली संस्था 'सत्यासारणी' में रहती है। इसमें गौर करने वाली बात यह है कि अपर्णा से पहले हिन्दु लड़की निमिषा से फातिमा बनी का भी जबरन धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया था, बताया जा रहा है फातिमा 20 अज्ञात लड़कों के साथ इराक या सीरिया पहुंच चुकी है।

इसी तरह अगस्त 2010 में तमिलनाडु के सेलम में सिवराज हौम्योपैथी मेडिकल कॉलेज एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट में पढ़ने गयी के.एम. अशोकन की इकलौती बेटी हादिया आज अखिला के नाम से जानी जाती है। अखिला के दादा की मौत के बाद घर में पूजा की जा रही थी। अखिला ने वहां बैठने से इंकार कर दिया। घरवालों के पूछने पर उसने बताया की वह इस्लाम धर्म अपना चुकी है। कुछ समय बाद वह अपने सेलम स्थित कॉलेज जाने के बहाने घर से चली गई। अखिला भी अब मरकजुल हिदया सत्या सारणी संस्था से

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

वेद-स्वाध्याय

दैव्य जन और मनुष्य जन

यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः।। - *अथर्व. 6/51/3*
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता - **वरुणाः।।** छन्दः **पादनिचृज्जगती।।**

शब्दार्थ- वरुण = हे वरुण **मनुष्याः** = हम मनुष्य **दैव्ये जने** = तुझ दिव्य जन में **इदं यत् किंच अभिद्रोहम्** = यह जो कुछ द्रोह **चरामसि** = किया करते हैं और **अचित्तीः** = अज्ञान और असावधानता से **यत् तव धर्माः युयोपिम** = जो तेरे धर्मो का लोप किया करते हैं **देव** = हे देव **तस्मात् एनसः** = उस पाप के कारण **नः मा रीरिषः**= हमारा नाश मत करो।

विनय- हे वरुण! तुम जन हो तो दैव्य जन हो-पर हम गिरते-पड़ते उठने का यत्न करने वाले जन हैं। हे देव! हम मनुष्यों पर दया करो, हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। हम बेशक तुम्हारा द्रोह करने वाले बड़े भारी अपराधी होते रहते हैं। तुम्हारे धर्मो का लोप करना सचमुच बड़ा द्रोह है। जो कुछ हमें मिल रहा है वह सब-कुछ तुम्हीं से मिल रहा है और वह सब इसीलिए मिल रहा है, क्योंकि तुम्हारे धर्म सत्य हैं, अखण्ड हैं। यदि तुम्हारे धर्म कभी खण्डित हो सकें तो तुम तुम न रहो, परन्तु इन्हीं तुम्हारे सत्यधर्मो को (जिनके कारण हमें यह सब-कुछ मिल रहा है) हम लोग अपने व्यवहार में लोप कर देते हैं। यह कितना द्रोह है? ये तुम्हारे सनातन धर्म हमारे व्यवहार में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय आदि रूपों में प्रकट होते हैं, परन्तु हम इनका परिपालन न कर तुम सर्वदाता प्रभु के द्रोही होते रहते हैं। फिर भी हे देव! हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमें सहन करो, हमें कठोर दण्ड देकर हमारा नाश मत करो! क्योंकि यह सब धर्मभङ्ग हम जान-बूझकर नहीं करते। जो कुछ हमसे धर्म-लोप हाता है वह अज्ञान से, प्रमाद से, असावधानी से होता है। अब हम कभी जान-बूझकर अधर्माचरण में नहीं प्रवृत्त होते, पर ये अज्ञान की, असावधानी की भूलें होते रहना तो हम मनुष्यों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। वरुण राजन्! हम जानते हैं कि राजद्रोह बड़ा भारी अपराध है। तुम्हारे सच्चे, पूर्ण कल्याणमय राज्य का द्रोह करना आत्मघात करना है। अतएव अब हम अपनी शक्ति भर और जान-बूझकर तुम परम प्यारे का द्रोह कैसे कर सकते हैं? परन्तु तुम भी हमारे अज्ञान से किये अपराधों को क्षमा करो, किन्तु नहीं, तुमसे हम क्षमा के लिए क्यों कहें? तुम तो हमारा विनाश कर ही नहीं सकते। तुम जो भी कुछ करोगे हमारा कल्याण ही करोगे-यह निश्चित है। फिर तुमसे प्रार्थना तो इसलिए है कि इस द्वारा हम तुम्हारे कुछ और अधिक निकट हो जाएं, हमारा हृदय शुद्ध हा जाए, क्योंकि तुम्हारे आगे रो लेने से हृदय की शुद्धि हो जाती है और भविष्य के लिए धर्म-भङ्ग होने की सम्भावना और-और कम होती जाती है।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जहरीला धुआँ : जिम्मेदार कौन?

...तथ्य यह भी है कि पराली तो किसान सालों से जला रहे है। जबकि धुएं का दानव पिछले तीन चार सालों से लोगों को ज्यादा निगल रहा है। क्या इसमें अकेले किसान ही दोषी हैं? पेट्रोल, डीजल के बेशुमार दौड़ते वाहन और कचरे और लकड़ी जलाना क्या प्रदूषण के लिए जिम्मेदार नहीं है? अकेले सितम्बर माह में ही राजधानी दिल्ली में करीब1 लाख 25 हजार वाहन कम्परियों द्वारा बेचे गये। सड़कों पर दौड़ते वे वाहन क्या विषैला धुंआ नहीं छोड़ते? ...

आसमान में बादलों के तरह छाये जहरीले धुएं के कारण आजकल भारत की राजधानी दिल्ली की साँस उखड़ रही है। जीव एक-एक साँस के सहारे जीवन पूरा करता है, लेकिन जब वह साँस ही जहरीली हो जाये तो कोई क्या करें? वर्तमान हालात आपातकाल जैसे हैं। आँखों में जलन के साथ पानी आ रहा है। स्कूल बंद किये जा रहे हैं। विशेषज्ञों और न्यूज एजेंसियों के अनुसार हालात कमोबेश वैसे ही हैं जैसे लंदन में 1952 के ''ग्रेट स्मॉग'' के दौरान थे। उस दौरान वहां करीब 4,000 लोगों की असामयिक मौत हो गई थी। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है यदि दिल्ली में हवा का ऐसा ही स्तर बना रहा तो यहाँ भी असामयिक मौतों हो सकती हैं।

व्यस्त जीवन रोजाना की भागदौड़ और घर से ऑफिस और ऑफिस से घर, किसके पास टाइम है इन बातों पर ध्यान देने का! बस 50 या 100 रुपये का मास्क ले लिया मानों साँस शुद्ध हो गयी और सब कष्ट दूर हो गये हम तो निपट गये जहरीले धुएं से तो हमारी जिम्मेदारी खत्म! कोई करे भी तो क्या? क्योंकि करने वाले ही दिल्ली में इस जहरीले धुएं से निपटने की योजना बनाने के बजाय पिछले साल हुई नोटबंदी का विरोध और जश्न मना रहे थे। हाँ ये बात सब मान रहे हैं कि हालात खराब हैं और इनसे निबटने के लिए सरकार को ही कोशिश करनी चाहिए पर एक सवाल यह भी हैं क्या बिना नागरिकों के शामिल हुए धुएं से पार पाने के इस युद्ध में अकेली सरकार जीत जाएगी? समाचार पत्रों और न्यूज चौनलों के माध्यम से बताया जा रहा कि सांसों के जरिये फेफड़े में दाखिल होने वाले प्रदूषक कण प्रदूषण मापने की इकाई के अनुसार (पीएम) 2.5 और (पीएम) 10 का स्तर कई स्थानों पर सुरक्षित सीमा से 17 गुना ज्यादा रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से संचालित निगरानी स्टेशनों का हर घंटा वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 500 से ज्यादा रहा जोकि अधिकतम सीमा से कहीं ज्यादा है।

फिलहाल इस सबके लिए हरियाणा, पंजाब के खेतों से उठे धुएं को जिम्मेदार माना जा रहा है लेकिन तथ्य यह भी है कि पराली तो किसान सालों से जला रहे है। जबकि धुएं का दानव पिछले तीन चार सालों से लोगों को ज्यादा निगल रहा है। क्या इसमें अकेले किसान ही दोषी हैं? पेट्रोल, डीजल के बेशुमार दौड़ते वाहन और कचरे और लकड़ी जलाना क्या प्रदूषण के लिए जिम्मेदार नहीं है? अकेले सितम्बर माह में ही राजधानी दिल्ली में करीब1 लाख 25 हजार वाहन कम्परियों द्वारा बेचे गये। सड़कों पर दौड़ते वे वाहन क्या विषैला धुंआ नहीं छोड़ते? हमने पहले भी लिखा था कि कटते जंगल और बढ़ते सीमेंट के जंगलों से बने शहरों से निकलता विषैला धुआं, फैक्ट्रियों, कारखानों और मोटर-कारों से निकलता जहर वातावरण को गैस चैंबर बनाता जा रहा है। यदि आज प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरुद्ध सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जायेगा तो कब तक मानव जीवित रह पायेगा कोई परिकल्पना नहीं की जा सकती।

पिछले दिनों समुद्र के किनारों पर व्हेल मछलियों का मृत मिलना तो आसमान से पक्षियों का बेहोश होकर जमीन पर गिरना ये खबरें आज किसी के लिए कोई मायने नहीं रखती। थोड़े आगे भविष्य में यदि हम स्वच्छ वायु के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर पीठ पर बांधकर चलें तो इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। यदि कोई सोच रहा हो कि नहीं ऐसा तो नहीं होगा, तो उनसे बस यह सवाल है कि क्या आज से बीस-तीस वर्ष पहले किसी ने सोचा था कि हमें साफ पानी के लिए घरों में फिल्टर आदि लगाने पड़ेंगे?

पिछले दिनों एक वेबसाइट पर आंकड़े देखे उन्होंने बड़ी सरलता से आंकड़े दिए थे कि भारत में अब प्रति व्यक्ति सिर्फ 28 पेड़ बचे हैं और इनकी संख्या साल दर साल कम होती जा रही है। अब यदि कोई दिल्ली में बैठकर सोचे कि हमारे हिस्से अभी 28 पेड़ है तो वह गलत है क्योंकि ये पेड़ों की गणना पूरे देश में उसी तरह की गई है जिस तरह जनगणना। नेचर जर्नल की इस रिपोर्ट के अनुसार, दुनियाभर में एक व्यक्ति के लिए 422 पेड़ मौजूद हैं। दूसरे देशों की बात करें तो पेड़ों की संख्या के मामले में रूस सबसे आगे है। रूस में करीब 641 अरब पेड़ हैं, जो किसी भी देश से ज्यादा है। इसके बाद 318 अरब पेड़ों की संख्या के साथ कनाडा दूसरे स्थान पर 301 अरब पेड़ों की संख्या के साथ ब्राजील तीसरे स्थान पर और 228 अरब पेड़ों की संख्या के साथ अमेरिका चौथे स्थान पर है।

हम आज इन देशों से अपनी तुलना फैशन से लेकर भाषा और रहन-सहन से कर रहे हैं, जब इनकी तरह हमारी एक नागरिक के तौर पर जिम्मेदारी आती है तो हम सरकार क्या कर रही है? यह सवाल दागकर अपनी जिम्मेदरी से विमुख हो जाते हैं। आज हमारे देश में मंदिरों, मस्जिदों, बुतों-पुतलों मूर्तियों मजारों के लगाने हटाने के लिए रोज झगड़े होते हैं। जबकि किसी की भी याद में लगाई गई मूर्तियां या मजार ऑक्सीजन नहीं देती, बल्कि पेड़ ऑक्सीजन देते हैं। बिना रोटी और बिन दवा और अन्य आर्थिक कारणों से लोग मरते हैं सबने सुना होगा लेकिन जब लोग खुले मैदान में भी साँस न आने की वजह से मरेंगे तो सोचो जिम्मेदार कौन होगा?इसीलिए जिम्मेदारी सामूहिक है अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं यज्ञ किये जाएं और जहां तक हो सके वाहनों का इस्तेमान कम किया जाए।

- ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

क्या मृत्यु वास्तव में इतनी भयंकर है?

....जैसे हम एक अन्तर्वस्त्र के ऊपर और भी एक-दो वस्त्र पहनते हैं, ठीक वैसा ही यह शरीर रूपी वस्त्र है जिसको कि जीवात्मा धारण करता है। यह प्रकृति का नियम है कि प्रत्येक उत्पन्न हुए वस्तु की कुछ समय सीमा भी होती है, भेद मात्र इतना है कि शरीर को ढकने हेतु जो वस्त्र हम धारण करते हैं उसकी समय-सीमा कुछ दो, तीन,चार वर्षों की होती है और जीवात्मा जिस शरीर रूपी वस्त्र को धारण किया है वह दस,बीस, पचास, सौ तक चलती है परन्तु अंत में विनाश तो होना ही है। दोनों के व्यवहार में यदि हम समान बुद्धि बनाकर रखें तो दु:ख को दूर किया जा सकता है।.....

समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए परम पिता परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना की, यह शरीर भी बनाया और शरीर को उत्पन्न करने के साथ ही मत्यु नामक एक वस्तु भी बनायी है तथा इस नियम के साथ बांध भी दिया कि जब-जब शरीर की उत्पत्ति होगी तब-तब मृत्यु भी सुनिश्चित होगी। लोग इस सृष्टि को कुछ मात्रा में समझते हैं, प्रयोग भी करते हैं, इसी प्रकार इस शरीर को भी कुछ मात्रा में जानते हैं और उसका उपयोग भी करते हैं परन्तु लोग इस मृत्यु के स्वरूप को सही रूप में समझते नहीं हैं और अपने लिए उसको हानिकारक मानते हुए घृणा करते हैं, उससे दूर रहना चाहते हैं, बचना चाहते हैं, उसको कोई भी प्राणी प्राप्त नहीं करना चाहता, यदि अकाल किसी की मृत्यु हो भी जाये तो सभी सगे-सम्बन्धी अत्यन्त दुखी हो जाते हैं और शोक सागर में डूबे रहते हैं ।

वास्तविक रूप में देखा जाये तो इस शरीर से जीव का संयोग मात्र होना ही जन्म कहलाता है और शरीर से वियोग होने का नाम ही तो मृत्यु है, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। कुछ लोगों का मानना यह है कि मृत्यु सबसे बड़ा दु:ख है, मृत्यु सबसे भयंकर व डरावनी होती है और कुछ लोग यह भी कहते हैं कि दु:ख तो जिन्दगी देती है, मौत तो दु:ख से छुटकारा दिलाती है। यह तो सत्य ही है कि जब हमारी मृत्यु होती है तब संसार के सभी वस्तुओं से, सभी प्रकार के सुख व सुख-साधनों से और समस्त सगे-सम्बन्धियों से हमारा वियोग हो जाता है परन्तु उन सबके वियोग होने मात्र से ही दुखी होना उचित नहीं है। हमारी मिथ्या धारणा के कारण ही हम मृत्यु को स्वीकार नहीं करते और मृत्यु से भयभीत होते हैं, उससे बचना चाहते हैं। यदि हमें वास्तविक ज्ञान हो जाये अथवा उचित शिक्षा मिल जाये तो हम इस मृत्यु के दु:ख से बच सकते हैं। हमें अपने व्यवहार में, सोच में कुछ बदलाव लाने पड़ेंगे तभी हम इन अवश्यम्भावी परिस्थितियों में खुद को सामान्य रखते हुए दु:खी होने से स्वयं को बचा सकते हैं ।

इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं जैसे कि - एक बालक का वस्त्र पुराना हो जाता है अथवा फट जाता है तो उस बालक की माँ उस वस्त्र को बदल देती है और उसे नया वस्त्र धारण करवा देती है। वैसे ही हमारी जगत-माता परमेश्वर भी जब हमारे शरीर रूपी वस्त्र को देखती है कि यह तो जीर्ण-शीर्ण हो गया है, किसी दुर्घटना के कारण विदीर्ण हो गया है, हमारे रहने के लिए अथवा धारण करने हेतु उपयुक्त नहीं है तो उसी समय उसको बदल कर नए वस्त्र के रूप में एक नया शरीर धारण करा देती है। ऐसी स्थिति में कोई मन्द-बुद्धि बालक ही होगा जो कि अपनी माता जी के द्वारा फटे-पुराने वस्त्र के बदल दिए जाने पर दुखी होगा, रोयेगा, चिल्लायेगा ।

हम स्वयं यह निरीक्षण करके देख सकते हैं कि जब भी हमारा कोई वस्त्र फट जाये या पुराना हो जाये तो उसको बदलने में संकोच नहीं करते, भयभीत नहीं होते अथवा दुखी नहीं होते बल्कि हम स्वयं उसको निकाल कर उसके स्थान पर कोई सुन्दर व नया वस्त्र धारण करना पसन्द करते हैं । जब इस वस्त्र के साथ हमारा व्यवहार इस प्रकार का होता है तो फिर हम शरीर के साथ उससे भिन्न प्रकार का व्यवहार क्यों करें? जैसे हम एक अन्तर्वस्त्र के ऊपर और भी एक-दो वस्त्र पहनते हैं, ठीक वैसा ही यह शरीर रूपी वस्त्र है जिसको कि जीवात्मा धारण करता है। यह प्रकृति का नियम है कि प्रत्येक उत्पन्न हुए वस्तु की कुछ समय सीमा भी होती है, भेद मात्र इतना है कि शरीर को ढकने हेतु जो वस्त्र हम धारण करते हैं उसकी समय-सीमा कुछ दो, तीन,चार वर्षों की होती है और जीवात्मा जिस शरीर रूपी वस्त्र को धारण किया है वह दस,बीस, पचास, सौ तक चलती है परन्तु अंत में विनाश तो होना ही है। दोनों के व्यवहार में यदि हम समान बुद्धि बनाकर रखें तो दु:ख को दूर किया जा सकता है और एक मिथ्या ज्ञान के कारण हम दुखी होते हैं जैसे कि 'शरीर के नष्ट होने पर मैं भी नष्ट हो जाऊँगा, मेरा भी अस्तित्व समाप्त हो जायेगा'' जो कि हमें स्वीकार्य नहीं है। आत्मा को हम यदि नित्य माने तो दु:ख से प्रभावित नहीं होंगे।

वास्तव में कोई भी बच्चा व्यवहारों को समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, लोगों का व्यवहार, परम्पराओं को देख कर ही सीखता है। समाज में वह देखता है कि किसी के वियोग अथवा मृत्यु होने पर लोग दुखी होते हैं व रोते हैं, शोक मनाते हैं इसीलिए इन व्यवहारों को देखते हुए वह भी शोकाकुल होता है। यदि किसी बालक को बाल्यकाल से ही इस शरीर को वस्त्र के समान मानकर ही व्यवहार करना सिखाया जाये तो इन परिस्थितिओं में वह कभी भी दुखी नहीं होगा ।

ठीक इसी प्रकार जब हम किसी गन्तव्य स्थल पर जाते हैं तो उसके लिए किसी यान-वाहन आदि साधन का प्रयोग करते हैं और लक्ष्य प्राप्ति हो जाने पर उस साधन का परित्याग भी कर देते हैं, किसी-किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तो हमें अनेकों साधन बदलने पड़ते हैं और अगले साधनों के लिए पिछले साधनों को छोड़ना ही पड़ता है, ठीक ऐसा ही हम सबका लक्ष्य एक ही दु:ख निवृत्ति और सुख प्राप्ति है, भिन्न शब्द में कहें तो मोक्ष प्राप्ति ही है और उस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन यह शरीर है। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऐसे अनेक शरीर रूपी साधन बदलने पड़ते हैं। प्राय: किसी यात्रा में जब हम किसी साधन को छोड़ कर दूसरे साधन को पकड़ते हैं तो हमें कोई दु:ख भी नहीं होता परन्तु जब हम मोक्ष रूपी लक्ष्य के लिए शरीर बदलते हैं तो दु:ख होता है। ऐसा क्यों ?

वास्तव में यह हमारी मिथ्या मान्यता के कारण ही होता है। हम ऐसा मानते हैं कि हमारा यह शरीर ज्यों का त्यों बना रहे परन्तु ऐसा होता नहीं है और यह वास्तविकता भी नहीं है क्योंकि कोई भी उत्पन्न हुआ पदार्थ कभी नित्य हो ही नहीं सकता। यह शरीर भी उत्पन्न होने से अनित्य ही है। यदि हम इसको अनित्य ही मानें और पहले से ही मन में बसा लें कि यह कभी भी नष्ट हो सकता है, कभी भी यह वस्त्र बदलना पड़ सकता है अथवा लक्ष्य प्राप्ति के लिए कभी भी साधन बदलना पड़ सकता है तो हमें दु:ख नहीं होगा। जब सत्यता को, वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए हम अभ्यस्त हो जायेंगे, पूर्व से ही बार-बार उस सम्भावित घटनाओं की आवृत्ति करते रहेंगे तो अंत में उस स्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। अपने शरीर को छोड़ना पड़े अथवा अपने सगे-सम्बन्धियों से अलग होना पड़े, यदि हम पूर्व से ही मानसिक सज्जा कर लेंगे और उस आने वाली स्थिति के स्वागत में तैयार खड़े होंगे तो कभी भी दु:ख नहीं होगा। उस स्थिति का सामना करते हुए हम कहेंगे कि यह तो हमने पहले से सोच रखा था, यह तो हमें पहले से विदित था, यह कौन सी नयी बात है ? वास्तव में हमें दु:ख का अनुभव तब होता है जब हमारी मान्यता के विपरीत कोई घटना घट जाती है। हमारी मान्यता रहती है कि हमारे सम्बन्धी लोग हमसे कभी भी अलग नहीं होंगे और जब इसके विपरीत स्थिति हमारे सामने आ जाती है हमारे परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है तो हम कहते हैं कि यह क्या हो गया? मैंने तो कभी ऐसा सोचा भी नहीं था। यही तो हमारी कमी है कि हमने पहले से क्यों नहीं सोचा जोकि अवश्यम्भावी था। इसीलिए हमें उचित है कि पहले से ही इस विषय में सोच-विचार कर तैयार रहें जिससे कि दु:ख न हो।

- आचार्य नवीन

बोध कथा

अब तो अलख जगा बाबा!

एक था राजा, शायद भारत के दक्षिण में। एक दिन वह आखेट के लिए जंगल में गया, मार्ग भूल गया। देर हो गई भूख और प्यास से व्याकुल होने लगा। तभी देखा कि जंगल में एक लकड़हारा लकड़ियां काट रहा है। बहुत-से पेड़ कट चुके हैं, थोड़े से बाकी हैं। उन्हीं में से एक पेड़ की शाखाओं को नीचे गिरा रहा है। राजा ने उसके पास जाकर कहा-''भाई! मैं बहुत भूखा हूं। बहुत प्यास लगी है। तुम्हारे पास खाने को कुछ है क्या?''

लकड़हारे ने कहा- ''है, आओ बैठो। दूर उधर एक बावड़ी है। मैं वहां से पानी लाता हूं। तुम यह रोटी खाओ।'' और पोटली से निकालकर एक मोटी-सी रोटी उसने राजा के सामने रख दी। थोड़ा-सा शाक भी साथ रख दिया।

राजा ने उसको खाया। लकड़हारे का लाया हुआ पानी पिया। शान्त होकर कहा-''मैं अमुक स्थान का राजा हूं घर का मार्ग भूल गया हूं।''

लकड़हारे ने मार्ग बतला दिया। राजा ने कहा-''कष्ट के समय तुमने मेरी सहायता की। यदि तुमको भी आवश्यकता पड़ तो मेरे समीप आना। मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।''

लकड़हारे ने हाथ जोड़कर प्रणाम कर दिया। राजा चले गये। कुछ दिन व्यतीत हो गये। धीरे-धीरे वन में सभ वृक्ष समाप्त हो गये जिसमें लकड़हारा लकड़ी काटकर, कोयले बनाकर बेचता था। अब वह अपनी जीविका चलाये तो कैसे? लाये तो कहां से? बहुत दु:खी हो गया। दु:खी चित्त से राजा के पास पहुंचा। सेवकों ने राजा को सूचना दी कि लकड़हारा आपसे मिलना चाहता है।

राजा ने सोचा, स्मरण आया कि हां, एक लकड़हारे को सहायता देने का वचन दिया था- एक दिन उसने प्राण बचाये थे; बोला,''उसको अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाकर मेरे समीप लाओ।''

सेवकों ने लकड़हारे को स्नान कराया, नवीन वस्त्र पहनाये, राजा के सामने ले आये। राजा ने पूछा-''क्यों भाई लकड़हारे। क्या बात है? उदास क्यों हो?'' लकड़हारे ने उत्तर दिया-''महाराज! जिस वन में से लकड़ियां काटता था, समाप्त हो गया। अब जीविका का मेरे पास कोई साधन नहीं। आपकी शरण में आया हूं कि कोई वन मिले तो मैं भूखा मरने से बच जाऊं।''

राजा ने कहा-''हो जायेगा यह काम, तुम निश्चिन्त हो जाओ।''

- शेष अगले अंक में

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

यज्ञाग्नि से प्रकट होने वाले रंगों से चिकित्सा

मनोविज्ञान वेत्ता पुणे विश्वविद्यालय, 'अग्निहोत्र का मानसिक तनाव पर क्या प्रभाव पड़ता है' इस विषय पर अनुसन्धान कर रहा है। यज्ञ अनुसन्धान से सिद्ध हुआ है कि यज्ञ से बच्चों का मिर्गी रोग ठीक हो। मानसिक रूप से अविकसिक बच्चों की बुद्धि विकसित हो जाती है। सोलापुर के निकट एक स्थल पर चार बच्चों की बुद्धि विकसित की गई। सोलापुर के ही निकट एक स्थल पर चार माह तक हवन के समक्ष बिठाने से 3 बच्चों के मिर्गी रोग का शमन हुआ।

यज्ञ गैस से मन स्वत: ही प्रसन्न होता है, जिससे तनाव कम होता है। यज्ञ में मन्त्र पाठ से भी मानसिक रोग (कष्ट) दूर होने लगते हैं। यज्ञ निष्काम परोपकार की भावना से ही किया जाता है अत: यज्ञ से मानसिक शान्ति भी मिलती है। राग-द्वेष आदि की भावना स्वत: समाप्त होने लगती है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से वीतरागता आती है। सर्वे भवन्तु सुखिन: इत्यादि के पाठ से सुख व आनन्द मिलता है। ओ3म् शान्ति की प्रार्थना से मन में शान्ति आती है।

अत: यज्ञ से शारीरिक लाभ के ही साथ मानसिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ में डाला घृत बुद्धि को प्रबल व प्रखर करता है व कुवृत्ति को शान्त करता है। जयमासी की आहुति कामवासना नाशक है। चावल व जौ का भाप क्रोध शमन करता है। यज्ञ से नशा, ड्रग आदि की लत भी छूटती है।

'साइकिस्ट्री ऑफ इण्डियन आर्मी' के चिकित्सा विज्ञानी- ले. जी. आर गोलेच्छा ने अपने सहयोगियों सहित गम्भीरता पूर्वक अनुसन्धान किया। उन्होंने अपने सहयोगियों सहित गम्भीरता पूर्वक अनुसन्धान किया। उन्होंने अपने शोध-पत्र में बताया कि वर्षों से स्मैक, हीरोइन जैसी नशीली वस्तुओं के सेवनकर्त्ताओं पर यज्ञ से एक सप्ताह के भीतर ही परिवर्तन शुरू हो गये थे। उन्हें 3 माह के यज्ञ से ही नशा एवं बुरी आदतों से मुक्ति मिली तथा वे शरीर व मन से भी स्वस्थ हो गए।

मैसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉज के प्रसि वैज्ञानिक डॉ. रिचर्ड जे वुर्टमैन- ''शारीरिक क्रियाकलापों में आहार के बाद सबसे ज्यादा महत्त्व प्रकाश का ही है।''

विभिन्न रंगों का व्यक्ति के रक्तचाप, श्वसन गति तथा मस्तिष्क के क्रियाकलापों पर विभिन्न प्रभावकारी है, अत: रंग चिकित्सा रोगनाशक है।

अमेरिकी इंस्टीट्यूट ऑफ बायो सोशल रिसर्च के निदेशक प्रो.एलेकजेंडर सोस- ''विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा हाइपोथर्लमस, पिपनियल एवं पिच्दुटर ग्लैण्ट्स (केन्द्रों) को प्रभावित करती हैं।''

जर्मनी अकादमी ऑफ कलर साइन्स के अध्यक्ष ने विद्यालय के लड़कों पर प्रयोग कर कहा-''विद्यालय की दीवारों के रंग बदलने पर बच्चों का रक्तचाप 120 से घटकर 100 आ गया। उनकी एकाग्रता एवं अनुशासनात्मकता बढ़ी तथा व्यवहार में भी काफी सुधार आया। प्रयोगों से प्रमाणित हुआ है कि प्रकाश दृष्टि पटल पर पड़कर हमारी पिनियल ग्रन्थि में से निकलने वाले मेला टोनिन नामक महत्त्वपूर्ण स्राव के संश्लेषण को प्रभावित करता व मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

अत: यज्ञाग्नि के दिव्य लाल, पीले, नारंगी इत्यादि रंगों से शरीर में दिव्य गुण तथा मन मस्तिष्क को शुद्ध व पवित्र करते हैं।

रंग विज्ञान की मान्यतानुसार, रंगानुसार ही हमारे भाव, विचार, आचार, व्यवहार आदि होते हैं। अत: यज्ञाग्नि सबको दिव्य बनाती है। यज्ञ का नारंगी रंग वैराग्य की भावना से मुक्ति तक पहुंचाने में भी अति सहायक होता है। (अत: होम का प्रभाव असंख्य है, लाभ लें) यज्ञ के लाल रंग-नाड़ी मण्डल और रक्त को सक्रिय बनाता है। इन्द्रियों की क्रियाशीलता इसी रंग पर निर्भर है। लाल रंग शरीर में शक्ति का संचार करता है। मस्तिष्क के दाएं भाग को सक्रिय रखता है। शरीर के क्षारों को तोड़कर आयोनाइजेशन करता है। इस रंग में प्रतिरोधात्मक शक्ति होने से इसे स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है।

लाल रंग - यज्ञ कुण्ड के लाल रंग को देखते रहने से हमारा दर्शन केन्द्र भी सक्रिय होने लगता है। यह सक्रियता हमारी आदतें भी सुधारने लगती है। यह सक्रियता हमारी आदतें भी सुधारने लगती है। यज्ञकर्त्ता अनिर्वचनीय आनन्दानुभूति करने लगता है। लाल रंगों पर टकटकी लगाने से दीर्घ काल में क्रोध, सहनशीलता में धीरे-धीरे बदलाता चला जाता है।

पीला रंग - बुद्धि एवं दर्शन का रंग है। इससे मानसिक कमजोरी व उदासीनता भी दूर होती है। यह नाड़ियों को सक्रिय तथा मांसपेशियों को शक्तिशाली बनाता है। पीले रंग का मनोवैज्ञानिक प्रभाव-चित्त की प्रसन्नता है।

नारंगी रंग - प्लीहा, फुफुस, पेन्क्रियाज आदि को सक्रिय एवं बलवान बनाता है। मन में प्रेम, प्रसन्नता एवं सुन्दर भावनाओं का प्रसार करता है।

मयूरी नीला रंग - दर्शन से रक्त हेतु टॉनिक का कार्य करता है। यह थायराइड ग्लैण्डस को सक्रिय करता है। व्यक्ति की काम वासनाओं को शान्त करने में यह रंग काफी उपयोगी साबित हुआ है। अत: हवन गैस, भस्म के अलावा भिन्न-भिन्न रंगों द्वारा भी लाभकारी है। प्रभु आश्रित जी महाराज-''यज्ञाग्नि के विभिन्न रंग तन मन पर उत्तम प्रभाव डालते हैं। रोगों तथा मनोरोगों से भी रक्षा करते हैं।

हमें प्रत्यक्ष में तो पता नहीं चलता कि कैसे सूर्य किरण रक्षा करती हैं। भिन्न-भिन्न रंगों की बोतलों में जल व तेल भरकर सूर्य प्रकाश के सामने रखने से उस जल या तेल में उसी रंग के गुण आ जाते हैं। जिसे पीकर या मालिश से विभिन्न रोग ठीक होते हैं। अत: यज्ञ में विभिन्न औषधियां भिन्न-भिन्न रंग पैदा करती हैं। उन लपटों एवं उनके रंगों के दर्शन से भी रोग नाश होता है।

यज्ञ के रंगों का प्रभाव हमारे आठों धातुओं (चक्रों) रक्त, रस, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य एवं ओज पर पड़ता है। जो अति हितकर होता है। विभिन्न औषधियों से यज्ञ में भिन्न-भिन्न रंगों की लपटें उठती हैं। उनका हम पर उत्तम प्रभाव होता है।

1. जटामांसी, उड़द व तिल की आहुति से उत्पन्न रंग कामवासना शान्त करता है।

2. चावल व जौ की आहुति का रंग क्रोधवृत्ति को शान्त करता है।?

3. मूंग का रंग (जलने पर) लोभ वृत्तिनाशक सिद्ध हुआ है। इस सामग्री की तरह हमारी कुवासनाएं भी दग्ध हो रही हैं, यह भावना भी रखें। *-वन्द्येश्वर मुमुक्षु वानप्रस्थ*

''सहयोग'' के लिए भेजें अपना सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — **विनय आर्य**, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — **जोगेन्द्र खट्टर**, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

विशेष निवेदन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। *- महामन्त्री*

हजारों की उपस्थिति में वैदिक भारत-कौशल भारत - आर्य महासम्मेलन पंजाब सम्पन्न

आर्यसमाज के उत्थान व संस्थाओं की उन्नति के लिए सभाओं को मिलकर कार्य करना होगा- सुदर्शन शर्मा

वेद मार्ग पर चलकर ही प्राप्त कर सकते हैं पुनः विश्व गुरु की पदवी -आचार्य वीरेन्द्र विक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा आयोजित ''वैदिक भारत-कौशल भारत आर्य महासम्मेलन'' आर.के. आर्य कॉलेज महर्षि दयानन्द मार्ग नवांशहर में धूमधाम से आयोजित हुआ। महासम्मेलन का शुभारम्भ गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री अमित शास्त्री जी थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। स्कूल छात्राओं ने ध्वजगीत गाकर ओ३म् ध्वज की महिमा का वर्णन किया। ध्वजारोहण के पश्चात् विभिन्न प्रदेशों से पधारे आर्य प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से वेद की ज्योति प्रज्ज्वलित की गई। तत्पश्चात् सूफी गायिका डॉ. ममता जोशी ने प्रभु भक्ति के भजनों से समां बांध दी।

कार्यक्रम संयोजक श्री विनाद भारद्वाज ने वैदिक भारत-कौशल भारत के सम्बन्ध में अपने प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किए। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की प्रमुख डॉ. प्रतिभा विद्यालंकार एवं दिल्ली से आए वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने अपना-अपना सम्बोधन किया और कहा कि वेदों की ओर लौटे बिना विश्व में शान्ति सम्भव नहीं है। अगर हमें वैदिक भारत बनाना है, कौशलयुक्त भारत का निर्माण करना है तो हमें वेदों की ओर लौटना ही होगा। वेद के मार्ग पर चलकर ही हम पुनः विश्व गुरु की पदवी प्राप्त कर सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री श्री उम्मेद शर्मा विशेष तौर पर उपस्थित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी अधिकारियों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। इस अवसर पर दोनों महानुभावों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री विनय आर्य ने समस्त आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का समस्त आर्य जगत में एक गौरवपूर्ण स्थान है। श्री उम्मेद सिंह शर्मा जी ने कहा कि हमारी विरासत की रक्षा हम सबको मिलकर करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पाने के लिए यज्ञ के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वातावरण तभी स्वच्छ रह सकता है जब घर-घर में यज्ञ होगा। आज प्रदूषण सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरा बन चुका है परन्तु हमारे ऋषियों ने हमें ऐसा मार्ग दिया है जिस मार्ग पर चलने से हम इस समस्या से छुटकारा पा सकते हैं। हमारे ऋषि वैज्ञानिक थे, उनके पास वेदों का अथाह ज्ञान था। इसलिए उन्होंने कहा कि यज्ञ करने से कई बीमारियां दूर होती हैं और वातावरण स्वच्छ तथा पवित्र होता है। कार्यक्रम के अन्त में आर्यजगत के गौरव स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि अगर आर्य समाज एकजुट होकर कार्य करे तो समाज से सभी बुराईयों को समाप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज ने किया।

महामंत्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य महासम्मेलन में उपस्थित सभी आर्यजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सबके उत्साह एवं सहयोग से ही यह महासम्मेलन सफल हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वेद की ज्योति को घर-घर में प्रज्ज्वलित करने का जो संकल्प लिया है, उसमें आप सभी का सहयोग चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित सभी विद्वानों, सन्यासियों एवं विशेष रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के महामंत्री श्री उमेश शर्मा जी का उपस्थित होने के लिए धन्यवाद किया।

- प्रेम भारद्वाज, महामन्त्री

दीमापुर (नागालैंड) में निर्माणाधीन विद्यालय के भवन का निरीक्षण

प्रेरक व्यक्तित्व

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी श्रीमती कृष्णा चढ्ढ़ा

श्रीमती कृष्णा चढ्ढ़ा का जन्म जलालपुर जट्टा जिला गुजरात (पाकिस्तान में हुआ परन्तु यह बचपन से हिन्दुस्तान विभाजन तक लाहौर में ही रहीं। इसके पिताजी श्री भीमसैन भसीन व माता श्रीमती ज्ञान देवी जी करुणा व ज्ञान की मूर्ति थे। श्रीमती कृष्णा चढ्ढ़ा का विवाह वर्ष 1948 में रामजस रोड, दिल्ली में श्री योगराज चढ्ढ़ा जी के साथ हुआ जो पंजाब नेशनल बैंक से अवकाश प्राप्त हैं। आपकी माताजी राष्ट्रीय अन्धविद्यालय की संस्थापिका सदस्य थीं। वर्ष 1949 से ही आप आर्य

समाज करोल बाग जाया करती थीं, वर्ष 1967 जब आप टैगोर गार्डन आईं उसी समय यहां स्त्री समाज का गठन हुआ और आपको महामंत्रिणी का कार्यभार सौंपा गया, वर्तमान में आप इस समाज की संरक्षिका हैं।

आपको दिल्ली की अनेकों आर्य समाजों एवं समाज सेवी संस्थाओं, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में सम्मानित किया। इस प्रकार आपने आर्य समाज की तन,मन व धन से अनथक सेवा करते हुए आर्य समाज का नेतृत्व करते हुए अनेक सम्मान प्राप्त किये। संप्रति आप आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की अधिकारी एवं राष्ट्रीय विरजानन्द अंधविद्यालय की सदस्या हैं। श्रीमती कृष्णा चढ्ढ़ा जी बचपन से ही धार्मि, सामाजिक, सेवाप्रवृत्ति की महिला है।, इनको वैदिक प्रचार-प्रसार करने में इनकी बहुओं एवं बेटों विशेषकर श्री चढ्ढा जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। आपने अपने पूरे परिवार तथा सम्बन्धियों को स्नेह के सूत्र में बांधा हुआ है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा केरल में शीतकालीन द्वितीय 'स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर' मार्च-2018 में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 23 से 31 जनवरी तक केरल में आयोजित होने वाले 'स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर' में भाग लेने हेतु जाने वाले महानुभावों की सभी सीटें पूर्ण हो चुकी हैं। दूसरा स्वाध्याय शिविर मार्च, 2018 में आयोजित किया जाएगा जो आर्यजन सम्मिलित होना चाहें वे संयोजक श्री शिव कुमार मदान जी (9310474979)को अपने नाम लिखवा दें। विस्तृत सूचना आर्य सन्देश के आगामी अंकों में दी जाएगी। - **महामन्त्री**

Veda Prarthana - 20

Dear God Help us Acquire Virtuous kbowledge and Prosperity

- Acharya Gyaneshwarya

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चिति दक्षस्य सुभत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नम्।।

Indra shreshthani dravinani dhei chitim dakshasya subhagatvam asme. Posham rayinam arishtim tanoonam swadmanam vachah sudinatvam ahnam.

(Rig Veada2: 21:6)

Indra Master of all spiritual and material wealth and prosperity, the Universal Benefactor, dhei asme give us i.e. with Your blessings may we acquire, shreshthani dravinani most splendid and noble wealth as well as prosperity, chitim dakshasya may we acquire superior knowledge and wisdom, subhagatvam may we be fortunate to enjoy good rewards of past and present karmmas. Posham rayinam may You nurture and strengthen our physical and spiritual wealth, tanoonam arishtim may we be healthy, strong and brave swadmanam vachah may our voice and words be honest and sweet, sudinatvam ahnam may our every day (day after day) be pleasant and joyful.

Dear God, You are called Indra because You are the Master of all spiritual and maerial wealth and prosperity in the universe as well as the Universal enefactor. Please help us acquire such virtuous wealth and prosperity which fulfills all types of our needs and virtuous desires. Although, Most persons in the world consider material wealth such as money, gold, silver, precious stones like diamonds and rubies, land, palatial buildings as desirable wealth, yet they are not noble wealth. The noblest wealth one can have is a virtuous, bright and sharp mind as well as intellect. With such endowment a person can gain many types of desirable material and spiritual wealth, Having a superior mind and intellect helps a person quickly but not hastily decide the most appropriate thing to do under any given circumstances at all times. The same virtuous intellect helps a person learn and incorporate thoughtfulness, patience, seriousness, in one's decision making. As one's intellect increases to level of medha[1] through the practice of genuine Vedic Yoga a person develops a deep abiding faith in God and with that he/she can not only solve difficult intellectual problems but also increase his/her spiritual wealth such as trust in truth, hope, courage, fearlessness, bravery and selflesssness both at a personal level and he/she is able to promote the same in others. As one advances in the practice of Vedic Yoga, one attains God realization and one's intellect sharpens further to a stage called prajna or vibekkhyati. At this level a person has a deep understanding of the follwing: God and His attributes, truth and untruth, right and wrong, dharma and adharma, just and unjust, beneficial and harmful. With this awakened intellect he/she incorporates all that is virtuous in life and rejects that which is wrong. Dear God, with Your grace may we obtain such superior awakened intellect in life as the most precious wealth.

God gives us birth based on the results of our deeds in our previous lives. We have no control over to which parents as well as the country, city, town or village where we are born. Similarly, we have no control at birth over our physical appearance, skin or eye colors, or our intellect. All of these together constitute our birth fortune. However, by working hard and doing virtuous deeds in our present life we can change the future course of our life which one may all our future fortune. Our future fortune is not etched in stone, it can be modified as a result i.e. fruit of our present karmas. it is no use lamenting and/or blaming others for our past karmas and our station at birth. Ever day is a new day; with onsistent effort and doing virtuous deeds one can attain both spiritual and material prosperity in life now as well as in the future. Dear God, whatever virtuous spiritual and material wealth we have obtained from our parents, teachers and society as well as the virtuous ideals and traditions they have taught us, may we protect them by making them a part of our daily life and also selflessly propagate them to others. By making constant effort to live with above stated ideals may we increase our respet and honor in our society. Dear God, with Your help may we always stay alert and committed so that we never intentionally do bad deeds, either when we are alone or when interacting with others, which will bring disrespect or dishonor to us.

Dear God, You are our Supreme Benefacor who gives us our physical body which allows us to carry out all our actions. Therefore, just as at the beginning of this mantra explanation we asked for a sharp virtuous intellect, similarly, we ask for Your blessings so that we may have a strong, healthy physical body and a long lfe greater than 100 years, where we remain disease free and not become phsically dependent on others. Our scriptures tell us that our ability to carry out our dharma virtuous actions and progress spiritually is rooted in a healthy physical body. Kindest God, please also bless us with an honest and sweet voice. When our words are honest, sweet, clearly spoken and express a sincere desire to help others, it has a great impact on the listeners and results in successfully reaching our goals. Therefore, Dear God our prayer to You is to help make our speech ability perfect and free from error. May our thoughts, words and actions be same and virtuous with no inconsistencies between them.

Dear God, it is certain that when our mind, intellect, speech and physical body are all strong, healthy and virtuous, then we will be able to complete our tasks easily and find success in our lives. Dear God, give us blessings so that by Your grace day after day (everyday) our spiritual and material prosperity grows and matures. With a bright mind and intellect, honest and sweet speech, and a strong healthy body may we be full of peace and joy as well as succeed in our primary goal of life to attain Your realization and bliss.

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra # 3, 4, 6 and 17))

1. According to the Vedic scriptures, our intellect and the ability of the mind to think, analyze and make judgments is divided into four types, which are, in ascending, order of merit: Buddhi, Dhee, Medha and Prajna. Buddhi is ordinary intellect most persons have. Dhee, Medha and Prajna. Buddhi is ordinary intellect most persons have. Dhee is intellect that helps one discriminate right from wrong, truth from lies or propaganda. Medha and Prajna are activated with practice of true yoga as described above.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ - 31
विभिन्न पदार्थों व क्रियाओं के नाम

गतांक से आगे....

- हसति	उपायनम् ।	(श्वा श्वानौ श्वानः)।
- निन्दति	यानम् ।	मूषकः।
- रोदिति	आसन्दः/आसनम् ।	मकरः।
- भ्रमति	नौका ।	उष्ट्रः।
- चिन्तयति	पर्वतः।	पुष्पम् ।
- कुप्यति	रेलयानम् ।	पर्णे (द्वि.व)।
- स्वपिति	लोकयानम् ।	वृक्षः।
- क्षमां याचते/जृम्भते	द्विचक्रिका ।	सूर्यः।
- विस्मयो	ध्वजः।	चन्द्रः।
भवति/निर्निमेषं	शकरू।	तारकः/नक्षत्रम् ।
पश्यति	व्याघ्रः।	छत्रम् ।
- ध्यायति	वानरः।	बालकः।
- पश्यति	अश्वः।	बालिका ।
- वदति	मेषः।	कर्ण/।
- लिखति	गजः।	नेत्रे(द्वि.व)।
- प्रणमति	कच्छपः।	नासिका ।
- निर्दिशति	पिपीलिका ।	जिह्वा ।
- आशिषति	मत्स्यः।	औष्ठौ (द्वि.व) ।
- जिघ्रति	धेनुः ।	चपेटिका ।
- गच्छति	महिषी ।	बाहुः ।
- धावति	अजा ।	
- नृत्यति	कुक्कुटः।	
विमानम् ।	श्वा/कुक्कुरः/सारमेयः	

- क्रमशः -

आ० सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

वे कितने महान् थे!

महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज ने अपने जीवन के कुछ नियम बना रखे थे। उनमें से एक यह था कि अपने लिए कभी किसी से कुछ माँगना नहीं। इस नियम पर गृहस्थी नारायणप्रसाद (महात्माजी का पूर्वनाम) ने कठोरता से आचरण किया। अब उनका ऐसा स्वभाव बन चुका था कि वे किसी अज्ञात व्यक्ति से तुच्छ-से-तुच्छ वस्तु भी लेने से संकोच करते थे।

अपनी इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए महात्माजी ने संन्यास लेते समय कुछ राशि आर्यप्रतिनिधि सभा को दान करते हुए यह कहा कि आवश्यकता पड़ने पर वे इस स्थिर-निधि के सूद से कुछ राशि ले सकेंगे। श्री महाशय कृष्णजी ने इसपर आपत्ति की कि यह संन्यास की मर्यादा के विपरीत है। दान की गई राशि से यह ममत्व क्यों ?

महात्माजी चाहते तो अपने निर्णय का औचित्य सिद्ध करने के लिए दस तर्क दे सकते थे। उनके पक्ष में भी कई विद्वान् लेखनी उठा सकते थे तथापि उस महान् विभूति ने तत्काल पत्रों में ऐसी घोषणा कर दी कि मैं उस राशि से कभी भी सूद न लूँगा। आपने महाशय कृष्ण के लेख को उचित ठहराते हुए, अपनी आत्मकथा में इस आदर्श को गिरा हुआ कर्म बताया।+ महात्माजी ने स्वयं लिखा कि उन्होंने जो सूद से राशि लेनेवाली बात सोची थी यह उनकी आत्मा की निर्बलता ही थी। अपने गुण-दोष पर विचार करना और अपनी भूल का सुधार करना, यह आत्मोन्नति का सोपान है। नारायण स्वामीजी का जीवन इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज देव नगर, दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज मन्दिर, देव नगर 30 नवम्बर से 3 दिसम्बर के बीच अपना वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत चतुर्वेद शतकीय या, आर्य महिला सम्मेलन व आर्य बाल सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। श्री प्रदीप शास्त्री एवं श्री गौरव शास्त्री वेद पाठ करेंगे व भजन श्री सहदेव 'बेधड़क' जी के होंगे। *-रमेश बेदी, मंत्री*

झूठे गुरू, सद्गुरू और परमगुरू (एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी)

सामाजिक सजगता के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्बोधन

39 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों तथा रेजिडेंट वेलफेयर एसोसियेशन्स (दक्षिण दिल्ली) का एक संयुक्त प्रयास

दिनांक 19 नवम्बर 2017 (रविवार) सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थान- आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी-ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

आमन्त्रित विद्वान : संगोष्ठी अध्यक्ष : श्री धर्मपाल आर्य *प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,* **विषय प्रवर्तक : डॉ. विनय विद्यालंकार** – *एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी जी कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल, – प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड* **विशिष्ट व्याख्याता : स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज,** *संस्थापक परमाध्यक्ष, साँई प्रज्ञाधाम, साकेत, नई दिल्ली,* **डॉ. वागीश आचार्य,** *प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, एटा, उत्तर प्रदेश।* ***कृपया अपना अग्रिम पंजीकरण करने के लिए श्री अजय कुमार*** **(9911111989),** ***सुरेन्द्र प्रताप*** **(9953782813),** ***कर्नल गोपाल वर्मा*** **(9811121242)** ***से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। कृपया सायं 3.15 बजे तक अपना स्थान ग्रहण करें। आडिटोरियम परिसर में पार्किंग की समुचित व्यवस्था है।***

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 148वें वर्ष पर वैदिक महोत्सव

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 148 वें वर्ष पर 4 दिवसीय वैदिक महोत्सव बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री दीनदयाल गुप्ता के सान्निध्य में जिला सभा प्रधान श्री अजित आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों ने मंत्र पाठ किया व श्री सोमेन्द्र आर्य, श्रीमती अनुराधा कृष्ण रस्तोगी, श्री कैलाश कर्मठ व श्री हरिश्चन्द्र जी ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में विभिन्न समाजों के वैदिक विद्वान संन्यासियों ने भाग लिया। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्व मंत्री श्री व्यासनन्दन शास्त्री ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्गार व्यक्त करे हुए कहा कि 2019 के काशी में आयोजित विश्व सम्मेलन में बिहार का योगदान सर्वाधिक होगा। मंच संचालन मंत्री प्रमोद आर्य ने किया। सभा उप प्रधान श्री अनन्त लाल आर्य ने आभार व्यक्त किया। *-प्रमोद आर्य, मंत्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्यासारणी : संस्था या .....

जुड़ी है। दिसम्बर 2016 में उसकी शादी शैफीन नामक शख्स से हो गई। हालाँकि उनकी शादी का मामला पिता के.एम. अशोकन की याचिका के बाद सुप्रीम कोर्ट में अटका है जिसकी जाँच राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) कर रही है।

बिन्दू संपत की बेटी निमिषा भी इसी षडयन्त्र का हिस्सा बन चुकी है उसको भी प्रेमजाल में फंसाया गया, उसका उत्पीड़न हुआ, गर्भपात के लिए मजबूर किया गया, इस्लाम में कन्वर्ट किया गया और आखिरकार सज्जाद रहमान नाम के शख्स ने उसे छोड़ दिया ये सब कुछ तब हुआ जब वह कॉलेज में पढ़ रही थीं बिन्दु सम्पत का दावा है कि उनकी बेटी निमिषा संभवत: अफगानिस्तान में है और आईएस के कैंप में हो सकती है।

देखा जाए तो आदि शंकराचार्य की देव भूमि केरल में धर्मांतरण के दानवों की सत्यासारिणी एक अकेली संस्था नहीं है। ऐसी ही एक और दूसरी संस्था पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया के बारे में भी अब केरल पुलिस का दावा है कि इसके 6 कार्यकर्ता आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट में भर्ती हो चुके हैं। इनमें एक महिला भी है। एक न्यूज चैनल के स्टिंग के बाद केरल की स्वयंसेवी संस्था पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया भी जांच के घेरे में है। पीएफआई पर आरोप है कि वह हिन्दू महिलाओं का ब्रेनवाश कर उनकी मुस्लिमों से शादी और धर्मांतरण कर रही है।

इतिहास से सबक मिलता है कि सदियों से मुस्लिम देशों की कोशिश भारत देश को कभी सैन्य विजय के जरिए तो कभी सूफीवाद के जरिये मुस्लिम देश (दारुल-इस्लाम) में बदलने की रही है। हिन्दू राजाओं ने इन चुनौतियों का सामना किया और इसका अंत देश के खूनी बंटवारे रूप में हुआ। आज भारत के धर्मनिरपेक्ष ढांचे ने दारुल हरम की राहें और आसान कर दी हैं। फिलहाल जन सांख्यिकीय युद्ध में मुस्लिम कोख सबसे ताकतवर हथियार के रूप में सामने आ रही है दूसरा एक गैर-मुस्लिम स्त्री के इस्लाम स्वीकार करने का सीधा मतलब है एक गैर मुस्लिम कोख का मुस्लिम कोख में बदलना। यह समस्या सबसे ज्यादा केरल में है। अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े के अनुसार केरल से (2007) में 2167, (2008) में 2530, (2009) में 2909, (2010) में 3232, (2011) 3678 और (2012) 4310 लड़कियां लापता हुई हैं। इन लड़कियों में से 3600 के बारे में पुलिस और जांच एजेंसियों तक को भी कोई जानकारी नहीं है।

यदि इन तथ्यों को आधार माने तो आंकड़े सिर्फ उन मामलों के हैं जो दर्ज हुए हैं, असल में वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक होगी। छोटे गांवों और कस्बों में तो बहुतेरे हिन्दू माता-पिता के लिए इस बात का खुलासा करना ही बेहद अपमानजनक होता है कि उनकी लड़की को एक मुसलमान लड़के से प्यार हो गया है और वह उसके साथ भाग गई। पारिवारिक सम्मान जैसे दबाव भी माता-पिता को अपनी लड़कियों को उनके भाग्य पर छोड़ देने को मजबूर करते हैं। जिस कारण उस भाग्य का रास्ता सीधे कहाँ खुलता है किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। आज जिस तरह सत्ता में बैठे लोग इन संस्थाओं पर लगाम लगाने की मांग तो कर रहे हैं लेकिन सवाल यह भी है कि आखिर लगाम लगायेगा कौन ? *-विनय आर्य, महामन्त्री*

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - *विनय आर्य, महामन्त्री*

44वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अशोक विहार-1 का 44 वार्षिकोत्सव 29 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक मनाया जाएगा।यज्ञ ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र कुमार एवं भजनोपदेशक पं. दिनेश दत्त होंगे। समापन एवं वेद सम्मेलन 3 दिसम्बर को आयोजित होगा।-*प्रेम सचदेवा, प्रधान*

50वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज अमर कालोनी के 50वें वार्षिकोत्सव का समापन समारोह 19 नवम्बर को प्रात: 8 से 2 बजे तक आयोजित होगा। - *जितेन्द्र डाबर, प्रधान*

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** आरम्भ किया गया था। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बनें। यह स्तम्भ पुन: आरम्भ किया जा रहा है। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha @ yahoo. com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक', आर्य सन्देश
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का व्हाट्एप्प मोबाइल आओ जुड़ें - साझा करें विचार

मनुस्मृति

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

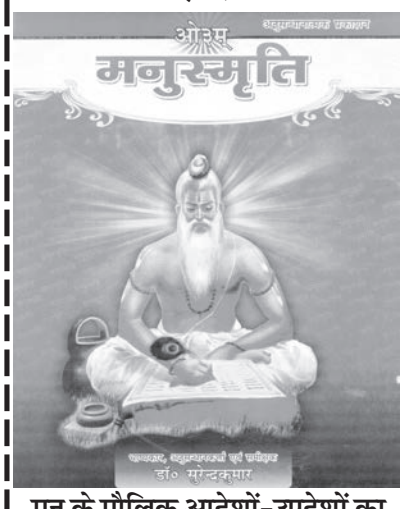

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

महर्षि दयानन्द कृत अर्थ एवं भावार्थ सहित

मूल्य : 600/-

विशेष छूट के साथ : 500/- में

(डाक व्यय अतिरिक्त)

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के युवक, एम.सी.ए, पी.जी.डी.आई.सी.पी., आयु 30 वर्ष, लम्बाई 5'8'', रंग सांवला, स्वरोजगार, आय औसतन 50 हजार मसिक, हेतु आर्य परिवार की समकक्ष, पूर्णतया शाकाहारी, कार्यरत वधू चाहिए। कोई जाति बन्धन नहीं। दिल्ली एन.सी.आर. को प्राथमिकता। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें- **मो. 9643152079, 9868997599, 9873988003**

सोमवार 13 नवम्बर, 2017 से रविवार 19 नवम्बर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16–17 नवम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 नवम्बर, 2017

सरदार बल्लभभाई पटेल की 142वीं जयन्ती सम्पन्न

सरदार बल्लभभाई पटेल स्मारक ट्रस्ट एवं चंद्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में देसराज परिसर के आर्य सभागार में आयोजित लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल की 142वीं जयंती आयोजन किया गया। समारोह में वरिष्ठ लेखक, चिंतक पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने अपने सम्बोधन में कहा 'सरदार पटेल प्रधानमंत्री न बने हों परन्तु जो काम वे कर गए वह कई प्रधानमंत्रियों के काम से अधिक है। यदि वे कुछ दिन और हमारे बीच रहते तो कश्मीर समस्या रह नहीं पाती और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं का भी स्थायी समाधान हो जाता।'

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, श्री मदीन अमरोही, डॉ. विजय मित्तल, ब्रिगेडियर अजय शर्मा, डॉ. आर. सी वत्स एवं डॉ. मधु गुप्ता शास्त्री ने उपस्थित होकर आयोजन को गरिमा प्रदान कीं

–नीतिंजय चौधरी, प्रबंध प्रन्यासी

श्री सुनील शास्त्री ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि वर्तमान सुविशाल भारत का निर्माण सरदार पटेल के बूते की ही बात थी। यह विरासत संभालने का दायित्व युवा पीढ़ी पर आने वाला है। समारोह के संचालन श्री नीतिंजय चौधरी ने सरदार पटेल को आधुनिक भारत के चाणक्य और चक्रवर्ती संन्यासी के रूप में याद किया। इस अवसर पर महा विद्यालयों के छात्रों ने 101 निबन्ध भेजे व चेतना स्वर कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। पटेल जयंती को लोकप्रिय बनाने व इसे युवा पीढ़ी से जोड़ने में वीरेश प्रताप चौधरी के योगदान का वक्ताओं और कवियों ने भावपूर्ण स्मरण किया। कार्यक्रम में

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

अब तक 30 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

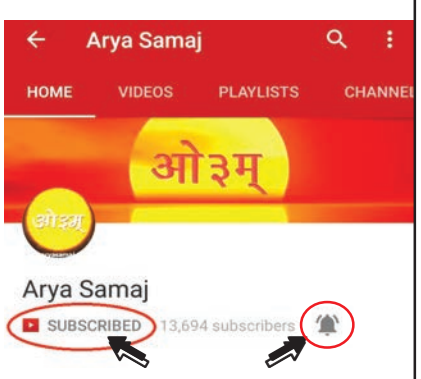

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह